अभ्यास पत्रक

पाठ: 8 - बिरजू महाराज से साक्षात्कार

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

---

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) बिरजू महाराज के गुरु कौन थे?

(क) केवल उनके पिता अच्छन महाराज

(ख) केवल उनके चाचा शंभू महाराज

(ग) उनके पिता और चाचा (शंभू महाराज और लच्छू महाराज)

(घ) नवाब के दरबारी कलाकार

(ii) पिता के देहांत के बाद आर्थिक परेशानियों के दौर में बिरजू महाराज की सबसे बड़ी सहयोगी कौन थीं?

(क) उनकी बहनें (ख) उनकी माँ

(ग) उनकी शिष्या शोभना नारायण (घ) नवाब की बेगम

(iii) बिरजू महाराज ने 'गंडा' बाँधने की रस्म में क्या बदलाव किया?

(क) उन्होंने यह रस्म बंद कर दी।

(ख) वे शिष्य से भेंट नहीं लेते।

(ग) वे कई वर्षों तक सिखाने के बाद सच्ची लगन देखकर ही गंडा बाँधते हैं।

(घ) वे केवल अपने परिवार के लोगों को ही गंडा बाँधते हैं।

(iv) बचपन में बिरजू महाराज का परिवार क्या कहलाता था?

(क) छोटे नवाब (ख) कथिकों का परिवार

(ग) संगीत सम्राट (घ) लखनऊ घराना

(v) माँ गुजारा चलाने के लिए पुरानी ज़री की साड़ियों को जलाकर क्या बेचती थीं?

(क) साड़ी की राख (ख) साड़ी का कपड़ा

(ग) सोने-चाँदी के तार (घ) साड़ी के मोती

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) बिरजू महाराज के पिता का क्या नाम था?

उत्तर- .....

(ii) बिरजू महाराज की माँ खाने से भी ज्यादा जरूरी किस चीज को मानती थीं?

उत्तर- .....

(iii) बिरजू महाराज की कौन-सी शिष्या आई.ए.एस. अफसर हैं?

egyanarchive

उत्तर- .....

(iv) बिरजू महाराज के चाचा ने नौकरी करने पर उन्हें क्या चेतावनी दी थी?

उत्तर- .....

(v) बिरजू महाराज ने बहुत छुटपन में कौन-सा वाद्ययंत्र बजाना शुरू कर दिया था?

उत्तर- .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। (3 x 2 = 6 अंक)

(i) 'गंडा' रस्म क्या होती है? बिरजू महाराज की तालीम के समय यह कैसे पूरी हुई?

उत्तर- .....

.....

(ii) पिता के देहांत के बाद बिरजू महाराज के परिवार की आर्थिक स्थिति कैसी हो गई थी?

उत्तर- .....

.....

(iii) बिरजू महाराज ने कथक में क्या-क्या नए बदलाव या चीजें जोड़ीं?

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें। (4 अंक)

(i) बिरजू महाराज के संघर्ष के दिनों में उनकी माँ की भूमिका का वर्णन करें। उन्होंने किस प्रकार परिवार को संभाला और बिरजू महाराज को प्रेरित किया?

उत्तर- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 1)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न:

(i) (ग) उनके पिता और चाचा (शंभू महाराज और लच्छू महाराज)

(ii) (ख) उनकी माँ

(iii) (ग) वे कई वर्षों तक सिखाने के बाद सच्ची लगन देखकर ही गंडा बाँधते हैं।

(iv) (क) छोटे नवाब

(v) (ग) सोने-चाँदी के तार

2. एक वाक्य में उत्तर:

(i) बिरजू महाराज के पिता का नाम अच्छन महाराज था।

(ii) बिरजू महाराज की माँ खाने से भी ज्यादा जरूरी अभ्यास को मानती थीं।

(iii) बिरजू महाराज की शिष्या शोभना नारायण आई.ए.एस. अफसर हैं।

(iv) बिरजू महाराज के चाचा ने चेतावनी दी थी कि नौकरी में बँट जाने से उनके अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।

(v) बिरजू महाराज ने बहुत छुटपन में तबला पीटना शुरू कर दिया था।

3. संक्षिप्त उत्तर:

(i) 'गंडा' गुरु और शिष्य के बीच एक पवित्र रिश्ता है, जिसमें गुरु शिष्य को ताबीज बाँधता है और शिष्य गुरु को भेंट देता है। बिरजू महाराज की तालीम के समय उनकी माँ ने उनके दो कार्यक्रमों की कमाई को भेंट के रूप में उनके पिता को दिया, तब जाकर गंडा बाँधा गया।

(ii) पिता के देहांत के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी। जिन डिब्बों में कभी लाखों के हार होते थे, वे खाली पड़े थे। कई बार तो रात में खाने को भी नहीं मिलता था।

(iii) बिरजू महाराज ने कथक की पुरानी परंपरा को कायम रखते हुए उसके प्रस्तुतीकरण में बदलाव किए। उन्होंने अपने पिता और चाचाओं के खड़े होने के निराले अंदाज और भाव-भंगिमाओं को कथक में शामिल किया। साथ ही, उन्होंने टैगोर और त्यागराज जैसे आधुनिक कवियों की रचनाओं पर भी कथक रचनाएँ तैयार कीं।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) बिरजू महाराज के संघर्ष के दिनों में उनकी माँ ने एक स्तंभ की तरह उन्हें सहारा दिया। वह उनकी सबसे बड़ी सहयोगी थीं। पिता के देहांत के बाद जब परिवार पर आर्थिक संकट आया, तो उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। घर चलाने के लिए उन्होंने कभी कर्ज लिया तो कभी अपनी पुरानी ज़री की कीमती साड़ियों को जलाकर उनके सोने-चाँदी के तार निकालकर बेचे। उन्होंने बिरजू महाराज की कला को सबसे ऊपर रखा। वे अक्सर कहती थीं कि खाने को भले ही चना मिले या कुछ भी न मिले, पर नृत्य का अभ्यास नहीं छूटना चाहिए। जब बिरजू महाराज की औपचारिक तालीम शुरू करने के लिए गुरु-दक्षिणा की बात आई, तो उन्होंने ही बेटे के दो कार्यक्रमों की कमाई को भेंट के रूप में उनके पिता को देकर इस परंपरा को पूरा करवाया। उनकी प्रेरणा और त्याग ने ही बिरजू महाराज को 'महाराज' बनने के लिए प्रेरित किया।